Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

Original Article

भारतीय दर्शन में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और वैश्विक शांति की अवधारणा

बिंदेश्वरी प्रसाद सिंह
शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग,
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

Manuscript ID: yrj-140405

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 4
Oct-Nov-Dec.- 2025
Pp. 35 - 45

Submitted: 10 Oct. 2025
Revised: 22 Oct. 2025
Accepted: 20 Nov. 2025
Published: 10 Dec. 2025

Corresponding Author:
बिंदेश्वरी प्रसाद सिंह

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.20772982

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.20772982

सारांश :

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में विश्व अनेक प्रकार की समस्याओं एवं संकटों से घिरा हुआ है। युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, जातीय संघर्ष, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट तथा नैतिक मूल्यों के पतन ने विश्व शांति के समक्ष गंभीर चुनौती उत्पन्न कर दी है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने मानव जीवन को आधुनिक एवं सुविधाजनक बनाया है, किन्तु मानव के भीतर बढ़ती स्वार्थपरता, भौतिकवादी प्रवृत्ति तथा असहिष्णुता ने समाज में अशांति एवं संघर्ष की स्थितियों को जन्म दिया है। वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व शांति, सह-अस्तित्व एवं मानवीय मूल्यों की खोज में निरंतर प्रयासरत दिखाई देता है।

ऐसे समय में भारतीय दर्शन की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होती है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का शाब्दिक अर्थ है — "संपूर्ण पृथ्वी एक परिवार है।" भारतीय सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परंपरा में यह विचार मानव मात्र के प्रति प्रेम, करुणा, समानता, सहिष्णुता एवं वैश्विक बंधुत्व की भावना को व्यक्त करता है। भारतीय चिंतन मानव को जाति, धर्म, भाषा एवं सीमाओं से ऊपर उठकर संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देता है। भारतीय दर्शन में अहिंसा, सत्य, दया, करुणा एवं सह-अस्तित्व जैसे मूल्यों को विशेष महत्व प्रदान किया गया है।

वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन दर्शन सहित भारतीय ज्ञान परंपरा की विभिन्न धाराएँ विश्व शांति एवं मानव कल्याण की भावना को सुदृढ़ करती हैं। गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी तथा महात्मा गाँधी जैसे महान चिंतकों ने अहिंसा एवं मानवता के माध्यम से विश्व को शांति का संदेश दिया। वर्तमान समय में जब विश्व हिंसा, युद्ध एवं असहिष्णुता की समस्याओं से जूझ रहा है, तब भारतीय दर्शन की सार्वभौमिक दृष्टि विश्व को शांति एवं सद्भाव की दिशा प्रदान कर सकती है।

प्रस्तुत शोध आलेख में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा, उसके दार्शनिक आधार, भारतीय चिंतन में उसकी उपस्थिति तथा वैश्विक शांति की स्थापना में उसकी भूमिका का विस्तृत अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

करता है कि भारतीय दर्शन में निहित सार्वभौमिक मानवता एवं सह-अस्तित्व की भावना वर्तमान वैश्विक संकटों के समाधान में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

प्रमुख शब्द : वसुधैव कुटुम्बकम्, भारतीय दर्शन, वैश्विक शांति, सह-अस्तित्व, मानवता, अहिंसा, करुणा, विश्व बंधुत्व, नैतिकता, भारतीय संस्कृति।

Creative Commons

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*
How to cite this article:
बिंदेश्वरी प्रसाद सिंह (2025). भारतीय दर्शन में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और वैश्विक शांति की अवधारणा. Young Researcher, 14(4), 35 – 45. https://doi.org/10.5281/zenodo.20772982

भूमिका :

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, समृद्ध एवं महान सांस्कृतिक परंपराओं में से एक मानी जाती है। भारतीय चिंतन सदैव मानव कल्याण, विश्व बंधुत्व, सह-अस्तित्व, नैतिकता तथा आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित रहा है। भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मोक्ष अथवा आत्मकल्याण तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण मानव समाज एवं समस्त जीव-जगत के कल्याण की भावना को स्थापित करना भी है। भारतीय ऋषियों एवं मनीषियों ने मानव जीवन को अत्यंत व्यापक एवं उदार दृष्टिकोण से देखा तथा संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार के रूप में स्वीकार किया। भारतीय संस्कृति की यह विशेषता उसे विश्व की अन्य संस्कृतियों से विशिष्ट एवं महान बनाती है।

भारतीय चिंतन में मानव मात्र के प्रति प्रेम, करुणा एवं सहिष्णुता की भावना को अत्यधिक महत्व दिया गया है। भारतीय दर्शन यह शिक्षा देता है कि समस्त मानव जाति एक ही परम चेतना का अंश है तथा सभी मनुष्य समान हैं। इसी भावना को "वसुधैव कुटुम्बकम्" के महान सिद्धांत के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है —

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥"[1]

अर्थात् संकीर्ण विचार वाले लोग "यह अपना है और वह पराया है" ऐसा विचार करते हैं, जबकि उदार हृदय वाले व्यक्तियों के लिए संपूर्ण पृथ्वी ही परिवार के समान होती है। यह श्लोक भारतीय संस्कृति की उदारता, सहिष्णुता एवं सार्वभौमिक मानवता का प्रतीक है। भारतीय दर्शन मानव को जाति, धर्म, भाषा, रंग, क्षेत्र एवं राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता के कल्याण की प्रेरणा देता है। भारतीय चिंतन में केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि समस्त जीव-जगत, पशु-पक्षियों तथा प्रकृति के प्रति भी प्रेम एवं करुणा की भावना दिखाई देती है।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

भारतीय संस्कृति में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" तथा "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु" जैसे मंत्रों के माध्यम से संपूर्ण विश्व के सुख, शांति एवं कल्याण की कामना की गई है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख प्राप्त करना नहीं, बल्कि नैतिकता, आत्मसंयम, सह-अस्तित्व एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास करना माना गया है। भारतीय चिंतन यह मानता है कि जब तक मानव अपने स्वार्थ एवं अहंकार से ऊपर उठकर दूसरों के सुख-दुःख को अपना नहीं समझेगा, तब तक वास्तविक शांति एवं मानवता की स्थापना संभव नहीं हो सकती।

वर्तमान समय में विश्व अनेक प्रकार के संकटों एवं चुनौतियों का सामना कर रहा है। युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, जातीय संघर्ष, सामाजिक विभाजन, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट तथा नैतिक मूल्यों का पतन मानव सभ्यता के लिए गंभीर चुनौती बन चुके हैं। विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने जहाँ मानव जीवन को सुविधाजनक एवं आधुनिक बनाया है, वहीं दूसरी ओर भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी जीवन शैली ने मानव को अत्यधिक स्वार्थी एवं प्रतिस्पर्धी बना दिया है। परिणामस्वरूप समाज में मानवता, नैतिकता, प्रेम एवं सहिष्णुता की भावना कमजोर होती जा रही है। आज विश्व के विभिन्न देशों के मध्य तनाव, हिंसा एवं संघर्ष की घटनाएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं, जिससे वैश्विक शांति खतरे में पड़ती दिखाई देती है।

इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय संकट भी वर्तमान समय की एक गंभीर समस्या बन चुका है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरणीय असंतुलन ने मानव अस्तित्व के समक्ष नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर दी हैं। ऐसी स्थिति में विश्व को ऐसी विचारधारा की आवश्यकता है, जो मानव को केवल भौतिक प्रगति ही नहीं, बल्कि नैतिकता, सह-अस्तित्व एवं संतुलित जीवन का मार्ग भी प्रदान करे। भारतीय दर्शन की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक सिद्ध होती है।

भारतीय दर्शन यह शिक्षा देता है कि समस्त मानव जाति एक-दूसरे से जुड़ी हुई है तथा विश्व की शांति एवं मानव कल्याण परस्पर सहयोग एवं सह-अस्तित्व पर निर्भर करते हैं। भारतीय चिंतन मानव को प्रेम, दया, करुणा, सहिष्णुता एवं सहयोग की भावना अपनाने की प्रेरणा देता है। गौतम बुद्ध ने अहिंसा एवं करुणा का संदेश दिया, महावीर स्वामी ने जीव-दया एवं अपरिग्रह पर बल दिया तथा महात्मा गाँधी ने सत्य एवं अहिंसा को मानवता की सबसे बड़ी शक्ति माना। इन सभी महान चिंतकों की शिक्षाओं में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

आज जब संपूर्ण विश्व वैश्वीकरण के युग में एक-दूसरे के निकट आ चुका है, तब भारतीय दर्शन की यह अवधारणा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। वर्तमान समय में विश्व शांति, सहयोग, सह-

अस्तित्व एवं मानवता की स्थापना के लिए भारतीय जीवन मूल्यों को अपनाना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। यदि मानव संकीर्णता, स्वार्थ एवं हिंसा के स्थान पर प्रेम, सहयोग एवं सहिष्णुता का मार्ग अपनाए, तो वैश्विक स्तर पर शांति एवं सद्भाव की स्थापना संभव हो सकती है।

प्रस्तुत शोध आलेख में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा, उसके दार्शनिक आधार, भारतीय दार्शनिक परंपराओं में उसकी उपस्थिति तथा वैश्विक शांति की स्थापना में उसकी भूमिका का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय दर्शन की यह अवधारणा किस प्रकार मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय दर्शन में निहित "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा एवं उसकी वैश्विक शांति संबंधी प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। इस शोध के माध्यम से भारतीय चिंतन में निहित मानवता, सह-अस्तित्व एवं विश्व बंधुत्व की भावना को समझने का प्रयास किया गया है। शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

1. "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा का दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण करना।
2. भारतीय दर्शन में विश्व बंधुत्व, मानवता एवं सह-अस्तित्व की भावना का अध्ययन करना।
3. वैश्विक शांति की स्थापना में भारतीय चिंतन की भूमिका को स्पष्ट करना।
4. भारतीय दार्शनिक परंपराओं में निहित नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का अध्ययन करना।
5. वर्तमान वैश्विक समस्याओं के समाधान हेतु भारतीय जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता को प्रस्तुत करना।
6. युद्ध, हिंसा, आतंकवाद एवं सामाजिक विभाजन जैसी समस्याओं के संदर्भ में भारतीय दर्शन की उपयोगिता को स्पष्ट करना।
7. मानव समाज में प्रेम, करुणा, सहिष्णुता एवं सहयोग की भावना विकसित करने की आवश्यकता को रेखांकित करना।
8. भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिक एवं उदार दृष्टि को वैश्विक संदर्भ में प्रस्तुत करना।
9. आधुनिक भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी जीवन शैली के दुष्प्रभावों का अध्ययन करना।
10. विश्व शांति एवं मानव कल्याण हेतु भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता को स्थापित करना।

वसुधैव कुटुम्बकम् : दार्शनिक आधार :

"वसुधैव कुटुम्बकम्" भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की अत्यंत महत्वपूर्ण एवं महान अवधारणा है। इसका मूल स्रोत महाउपनिषद् माना जाता है।[2] यह विचार केवल एक दार्शनिक सिद्धांत नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण, विश्व बंधुत्व एवं

सार्वभौमिक मानवता की भावना का प्रतीक है। भारतीय चिंतन में समस्त सृष्टि को एक ही परम चेतना का अंश माना गया है। इसलिए सभी मनुष्य समान हैं तथा उनके मध्य प्रेम, सहयोग, सह-अस्तित्व एवं परस्पर सम्मान का संबंध होना चाहिए। भारतीय दर्शन यह मानता है कि मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सुख एवं भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज एवं विश्व के कल्याण की भावना को विकसित करना है। उपनिषदों में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" की भावना के माध्यम से समस्त विश्व के सुख एवं शांति की कामना की गई है।[3] भारतीय चिंतन मानवता को विभाजित करने के स्थान पर उसे एकसूत्र में बाँधने का प्रयास करता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति सदैव उदारता, सहिष्णुता एवं विश्व बंधुत्व की प्रतीक रही है।

भारतीय दर्शन यह शिक्षा देता है कि वास्तविक शांति बाहरी साधनों, शक्ति अथवा हिंसा से प्राप्त नहीं की जा सकती, बल्कि इसके लिए मानव के भीतर नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना का विकास आवश्यक है। जब मानव अपने स्वार्थ, अहंकार एवं संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता के हित की भावना को अपनाता है, तभी विश्व में स्थायी शांति स्थापित हो सकती है। भारतीय चिंतन प्रेम, दया, करुणा, सहिष्णुता एवं सह-अस्तित्व जैसे मूल्यों को मानव जीवन का आधार मानता है।

भारतीय दार्शनिक परंपरा में "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" का सिद्धांत भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है, जिसका अर्थ है कि सत्य एक है, किन्तु विद्वान उसे विभिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं। यह विचार धार्मिक सहिष्णुता एवं विविधता में एकता की भावना को प्रकट करता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न धर्मों, भाषाओं एवं परंपराओं को समान सम्मान देने की शिक्षा देती है। यही कारण है कि भारतीय दर्शन संपूर्ण विश्व में शांति एवं सद्भाव स्थापित करने की दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

भारतीय चिंतन में प्रकृति एवं मानव के मध्य संतुलन को भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। भारतीय संस्कृति में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश को पूजनीय माना गया है। यह दृष्टिकोण मानव को प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व एवं संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देता है। आधुनिक समय में जब पर्यावरणीय संकट बढ़ता जा रहा है, तब भारतीय दर्शन की यह दृष्टि और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती है। इस प्रकार "वसुधैव कुटुम्बकम्" केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि मानवता, शांति, सह-अस्तित्व एवं वैश्विक सद्भाव की स्थापना का आधार है। यह अवधारणा वर्तमान समय में विश्व को नई दिशा प्रदान करने में सक्षम है।

भारतीय दर्शन और वैश्विक शांति :

भारतीय दर्शन में वैश्विक शांति की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं केंद्रीय मानी गई है। भारतीय चिंतन सदैव मानवता, सह-अस्तित्व,

नैतिकता, करुणा तथा विश्व बंधुत्व पर आधारित रहा है। भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य केवल व्यक्तिगत मोक्ष अथवा आत्मकल्याण नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के कल्याण एवं शांति की स्थापना करना भी है। भारतीय मनीषियों ने मानव जीवन को व्यापक दृष्टिकोण से देखा तथा समस्त मानव जाति को एक ही परिवार का अंग माना। भारतीय संस्कृति की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना इसी वैश्विक दृष्टिकोण को व्यक्त करती है।

भारतीय दर्शन यह मानता है कि शांति केवल बाहरी व्यवस्था अथवा राजनीतिक शक्ति से स्थापित नहीं की जा सकती, बल्कि इसके लिए मानव के भीतर नैतिक चेतना, आत्मसंयम एवं आध्यात्मिक विकास आवश्यक है। भारतीय चिंतन अहिंसा, सत्य, दया, करुणा, सहिष्णुता एवं सह-अस्तित्व जैसे मूल्यों को मानव जीवन का आधार मानता है। यही कारण है कि भारतीय दर्शन विश्व शांति एवं मानवता की स्थापना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही "सर्वे भवन्तु सुखिनः" तथा "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु" जैसे मंत्रों के माध्यम से संपूर्ण विश्व के सुख एवं कल्याण की कामना की गई है। भारतीय चिंतन मानव को केवल अपने हित तक सीमित रहने की शिक्षा नहीं देता, बल्कि संपूर्ण मानव समाज के प्रति प्रेम एवं सहयोग की भावना विकसित करने पर बल देता है। भारतीय दर्शन यह प्रतिपादित करता है कि जब तक मानव स्वार्थ, हिंसा एवं संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर सह-अस्तित्व एवं मानवता की भावना को स्वीकार नहीं करेगा, तब तक विश्व में स्थायी शांति स्थापित नहीं हो सकती।

वर्तमान समय में विश्व युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, जातीय संघर्ष, सामाजिक असमानता एवं पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने जहाँ मानव जीवन को आधुनिक एवं सुविधाजनक बनाया है, वहीं दूसरी ओर नैतिक मूल्यों के पतन एवं भौतिकवादी प्रवृत्ति ने मानव समाज में तनाव एवं संघर्ष को बढ़ावा दिया है। ऐसे समय में भारतीय दर्शन की शिक्षाएँ विश्व को शांति, सहिष्णुता एवं सहयोग का मार्ग प्रदान करती हैं।

वैदिक दृष्टिकोण :

वैदिक साहित्य में विश्व कल्याण, शांति एवं सह-अस्तित्व की भावना अत्यंत स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वेदों में मानव को सत्य, सदाचार, नैतिकता एवं सहयोग का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी गई है। भारतीय ऋषियों ने मानव एवं प्रकृति के मध्य संतुलन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना तथा संपूर्ण सृष्टि को दैवीय स्वरूप के रूप में स्वीकार किया।

यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में "शांति पाठ" के माध्यम से संपूर्ण विश्व में शांति एवं संतुलन की कामना की गई है —

"ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः

पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।"[4]

इस मंत्र के माध्यम से आकाश, पृथ्वी, जल, वनस्पतियों एवं संपूर्ण सृष्टि में शांति की कामना की गई है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि भारतीय संस्कृति केवल मानव समाज की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण प्रकृति एवं विश्व व्यवस्था की शांति एवं संतुलन को महत्वपूर्ण मानती है।

वैदिक ऋषियों ने प्रकृति एवं मानव के मध्य गहरे संबंध को स्वीकार किया। भारतीय संस्कृति में पृथ्वी को माता, नदियों को देवी तथा वृक्षों को देवतुल्य माना गया है। यह दृष्टिकोण सह-अस्तित्व, पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलित जीवन शैली की भावना को विकसित करता है। वैदिक चिंतन मानव को संयमित एवं नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है, जिससे समाज में शांति एवं सद्भाव की स्थापना संभव हो सके।

वेदों में "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" का सिद्धांत धार्मिक सहिष्णुता एवं विविधता में एकता की भावना को प्रकट करता है। इसका अर्थ है कि सत्य एक है, किन्तु उसे विभिन्न रूपों में समझा एवं व्यक्त किया जा सकता है। यह विचार विश्व में धार्मिक सहिष्णुता एवं पारस्परिक सम्मान की भावना को सुदृढ़ करता है।

बौद्ध दर्शन : गौतम बुद्ध ने अहिंसा, करुणा, दया एवं मध्यम मार्ग की शिक्षा देकर विश्व को शांति का संदेश दिया। बुद्ध का मानना था कि घृणा एवं हिंसा से कभी शांति स्थापित नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि "घृणा को केवल प्रेम द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है।"[5]

बौद्ध दर्शन मानव को क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार से मुक्त होकर करुणा एवं सह-अस्तित्व का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देता है। बुद्ध ने सभी मनुष्यों को समान माना तथा जाति एवं ऊँच-नीच की भावना का विरोध किया। उन्होंने मानवता एवं नैतिकता को धर्म का वास्तविक आधार माना।

बौद्ध चिंतन में "मध्यम मार्ग" की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। बुद्ध ने अति भोग एवं अति त्याग दोनों को अनुचित माना तथा संतुलित एवं संयमित जीवन शैली अपनाने का संदेश दिया। यह दृष्टिकोण आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति के विपरीत संतुलन एवं शांति की भावना को विकसित करता है।

बौद्ध दर्शन केवल व्यक्तिगत मोक्ष की बात नहीं करता, बल्कि संपूर्ण मानव समाज के कल्याण एवं शांति की स्थापना पर बल देता है। बुद्ध की शिक्षाएँ आज भी विश्व शांति, मानवता एवं नैतिकता के लिए अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती हैं। विश्व के अनेक देशों में बौद्ध दर्शन के माध्यम से शांति एवं सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जैन दर्शन: जैन दर्शन भारतीय दार्शनिक परंपरा की अत्यंत महत्वपूर्ण धारा है, जिसने अहिंसा, अपरिग्रह एवं आत्मसंयम के माध्यम से विश्व को शांति का संदेश दिया। महावीर स्वामी ने "अहिंसा परमो धर्मः" का सिद्धांत प्रस्तुत किया, जो आज भी मानवता के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।[6]

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक जीव में आत्मा का अस्तित्व होता है, इसलिए किसी भी जीव को हानि पहुँचाना नैतिक रूप से अनुचित है। जैन चिंतन केवल मानव ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षियों, वनस्पतियों एवं सूक्ष्म जीवों तक के प्रति करुणा एवं संवेदनशीलता की शिक्षा देता है। यह विचार वैश्विक स्तर पर सह-अस्तित्व एवं पर्यावरणीय संतुलन की भावना को मजबूत करता है। जैन दर्शन में अपरिग्रह अर्थात् सीमित उपभोग की भावना को विशेष महत्व दिया गया है। आधुनिक भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी जीवन शैली ने मानव को अत्यधिक स्वार्थी एवं लालची बना दिया है, जिसके कारण समाज में तनाव एवं संघर्ष बढ़ रहे हैं। जैन दर्शन संयमित एवं संतुलित जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा देता है, जिससे शांति एवं संतुलन की स्थापना संभव हो सकती है।

महावीर स्वामी ने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह जैसे पंच महाव्रतों के माध्यम से मानव को नैतिक एवं शांतिपूर्ण जीवन जीने की शिक्षा दी। जैन दर्शन आज भी विश्व शांति एवं मानवता के लिए अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

भगवद्गीता की दृष्टि : श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दर्शन का अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें मानव जीवन, नैतिकता, कर्तव्य एवं शांति के संबंध में गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं। गीता निष्काम कर्म, आत्मसंयम, समभाव एवं नैतिक जीवन पर विशेष बल देती है।[7]

भगवद्गीता के अनुसार मानव को लोभ, मोह, क्रोध एवं अहंकार से मुक्त होकर अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। गीता यह शिक्षा देती है कि जब मानव अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज एवं विश्व के कल्याण की भावना को अपनाता है, तभी वास्तविक शांति स्थापित हो सकती है। गीता में "समत्वं योग उच्यते" अर्थात् समभाव को योग कहा गया है। यह विचार मानव को मानसिक संतुलन एवं सहिष्णुता की प्रेरणा देता है। गीता का संदेश केवल धार्मिक नहीं, बल्कि नैतिक एवं सार्वभौमिक है। यह मानव को संतुलित, संयमित एवं शांतिपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

गीता में श्रीकृष्ण ने मानव को यह शिक्षा दी कि शांति एवं सुख बाहरी भौतिक साधनों से नहीं, बल्कि आत्मसंयम एवं आंतरिक संतुलन से प्राप्त होते हैं। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में गीता का यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

वर्तमान संदर्भ में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की प्रासंगिकता:

वर्तमान समय में विश्व अनेक गंभीर समस्याओं एवं संकटों से जूझ रहा है। युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, जातीय संघर्ष, आर्थिक असमानता, सामाजिक विभाजन एवं पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ मानव सभ्यता के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। ऐसे समय में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा विश्व को नई दिशा एवं सकारात्मक दृष्टि प्रदान कर सकती है।

आज वैश्वीकरण एवं संचार क्रांति के कारण संपूर्ण विश्व एक-दूसरे के अत्यंत निकट आ चुका है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने विश्व को छोटा अवश्य बना दिया है, किन्तु मानव के भीतर बढ़ती असहिष्णुता, स्वार्थ एवं प्रतिस्पर्धा की भावना विश्व शांति के लिए गंभीर खतरा बनती जा रही है। राष्ट्रों के मध्य संघर्ष, धार्मिक कट्टरता एवं हिंसा की बढ़ती घटनाएँ मानवता के समक्ष गंभीर प्रश्न खड़े कर रही हैं।

ऐसी परिस्थिति में भारतीय दर्शन मानव को प्रेम, सहयोग, करुणा, सहिष्णुता एवं सह-अस्तित्व का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देता है। यदि विश्व के राष्ट्र हिंसा एवं संघर्ष के स्थान पर संवाद, सहयोग एवं नैतिकता का मार्ग अपनाएँ, तो वैश्विक शांति की स्थापना संभव हो सकती है।

महात्मा गाँधी ने सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से संपूर्ण विश्व को शांति का संदेश दिया। उनका मानना था कि वास्तविक शांति केवल नैतिकता, प्रेम एवं मानवता के माध्यम से ही स्थापित की जा सकती है। गाँधीजी ने भारतीय दर्शन के "वसुधैव कुटुम्बकम्" के आदर्श को व्यवहारिक रूप में प्रस्तुत किया।

वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ भी विश्व शांति एवं सहयोग की दिशा में कार्य कर रही हैं, किन्तु केवल राजनीतिक एवं आर्थिक प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास भी अत्यंत आवश्यक है। भारतीय दर्शन की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा मानव समाज को यही नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार प्रदान करती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन में निहित विश्व बंधुत्व, सह-अस्तित्व, करुणा एवं अहिंसा की भावना वर्तमान वैश्विक संकटों के समाधान में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध हो सकती है। वास्तव में "वसुधैव कुटुम्बकम्" केवल एक दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि विश्व शांति एवं मानवता की स्थापना का सार्वभौमिक मार्ग है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय दर्शन में निहित "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा केवल एक दार्शनिक विचार अथवा सांस्कृतिक आदर्श मात्र नहीं है, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण, वैश्विक शांति एवं सह-अस्तित्व की स्थापना का सार्वभौमिक मार्ग है। भारतीय चिंतन मानव जीवन को संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठाकर व्यापक मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह दर्शन समस्त मानव जाति को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देता है तथा प्रेम, करुणा, सहिष्णुता, दया, सत्य एवं अहिंसा जैसे नैतिक मूल्यों को मानव जीवन का आधार मानता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति एवं दर्शन सदैव विश्व बंधुत्व एवं मानव कल्याण की भावना से प्रेरित रहे हैं। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन दर्शन सहित भारतीय ज्ञान परंपरा की विभिन्न धाराओं में शांति,

सह-अस्तित्व एवं नैतिकता का गहन संदेश निहित है। भारतीय चिंतन यह मानता है कि वास्तविक शांति बाहरी शक्ति, युद्ध अथवा भौतिक प्रगति से प्राप्त नहीं हो सकती, बल्कि इसके लिए मानव के भीतर नैतिक चेतना, आत्मसंयम एवं आध्यात्मिक विकास आवश्यक है। जब मानव स्वार्थ, अहंकार एवं संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर संपूर्ण मानवता के हित की भावना को स्वीकार करता है, तभी स्थायी शांति एवं सद्भाव की स्थापना संभव हो सकती है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में बढ़ती हिंसा, युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता तथा नैतिक मूल्यों के पतन ने मानव सभ्यता के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न कर दिया है। विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने जहाँ मानव जीवन को सुविधाजनक एवं आधुनिक बनाया है, वहीं दूसरी ओर अत्यधिक भौतिकवादी एवं उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने मानव को स्वार्थी एवं संवेदनहीन भी बना दिया है। परिणामस्वरूप समाज में प्रेम, सहिष्णुता, सहयोग एवं मानवता की भावना निरंतर कमजोर होती जा रही है। ऐसी परिस्थिति में भारतीय दर्शन की सार्वभौमिक एवं उदार दृष्टि विश्व को शांति, संतुलन एवं सद्भाव की दिशा प्रदान कर सकती है।

भारतीय दर्शन की "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अवधारणा वर्तमान समय में इसलिए और अधिक प्रासंगिक हो जाती है क्योंकि आज संपूर्ण विश्व वैश्वीकरण के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ चुका है। विभिन्न देशों, संस्कृतियों एवं समाजों के मध्य सहयोग एवं सह-अस्तित्व की आवश्यकता पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ गई है। यदि विश्व के राष्ट्र संघर्ष एवं हिंसा के स्थान पर संवाद, सहयोग एवं नैतिकता का मार्ग अपनाएँ, तो वैश्विक स्तर पर शांति एवं स्थिरता स्थापित की जा सकती है। भारतीय चिंतन मानव को यह शिक्षा देता है कि समस्त विश्व एक ही परिवार है तथा प्रत्येक व्यक्ति का सुख-दुःख एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है।

महात्मा गाँधी, गौतम बुद्ध एवं महावीर स्वामी जैसे महान भारतीय चिंतकों ने सत्य, अहिंसा, करुणा एवं मानवता के माध्यम से विश्व को शांति का संदेश दिया। इन महान व्यक्तित्वों की शिक्षाएँ आज भी विश्व के लिए प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। भारतीय दर्शन का यह मानवीय दृष्टिकोण केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि वर्तमान वैश्विक समस्याओं का समाधान केवल राजनीतिक, आर्थिक अथवा वैज्ञानिक उपायों से संभव नहीं है। इसके लिए नैतिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास भी अत्यंत आवश्यक है। जब तक मानव अपने भीतर मानवता, सहिष्णुता, करुणा एवं सह-अस्तित्व की भावना विकसित नहीं करेगा, तब तक विश्व में स्थायी शांति की स्थापना संभव नहीं हो सकती। भारतीय दर्शन मानव को संतुलित, संयमित एवं नैतिक जीवन शैली अपनाने की प्रेरणा

देता है, जो वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक समाज भारतीय सांस्कृतिक एवं दार्शनिक मूल्यों को पुनः आत्मसात करे तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को व्यवहारिक जीवन में अपनाए। शिक्षा, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक जागरूकता के माध्यम से मानव समाज में प्रेम, सहयोग एवं सह-अस्तित्व की भावना को विकसित किया जाना चाहिए। यदि विश्व भारतीय दर्शन की इस महान अवधारणा को स्वीकार कर उसके अनुसार जीवन जीने का प्रयास करे, तो न केवल वैश्विक शांति एवं मानवता की स्थापना संभव होगी, बल्कि समस्त विश्व में स्थायी सद्भाव, संतुलन एवं कल्याण का वातावरण भी निर्मित किया जा सकेगा। वास्तव में "वसुधैव कुटुम्बकम्" केवल एक दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि संपूर्ण मानव सभ्यता के उज्ज्वल एवं शांतिपूर्ण भविष्य का आधार है।

संदर्भ सूची :

1. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. भारतीय दर्शन. नई दिल्ली : राजपाल एंड संस, 2018, पृ. 45–52।
2. उपाध्याय, बलदेव. भारतीय दर्शन का इतिहास. वाराणसी : चौखंबा प्रकाशन, 2016, पृ. 112–118।
3. महाउपनिषद्. गोरखपुर : गीता प्रेस, अध्याय 6, श्लोक 71, पृ. 84।
4. श्रीमद्भगवद्गीता. गोरखपुर : गीता प्रेस, अध्याय 2, श्लोक 47–50, पृ. 96–102।
5. धम्मपद. बौद्ध ग्रंथ, अनुवाद संस्करण, नई दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास, 2015, पृ. 38–44।
6. जैन, महेंद्र कुमार. जैन दर्शन और मानवता. जयपुर : साहित्यागार प्रकाशन, 2017, पृ. 67–74।
7. गाँधी, मोहनदास करमचंद. सत्य के प्रयोग. अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन, 2019, पृ. 155–162।
8. शर्मा, रामविलास. भारतीय संस्कृति और मानव मूल्य. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2014, पृ. 88–95।
9. पाण्डेय, हजारीप्रसाद. भारतीय संस्कृति के आधार. नई दिल्ली : लोकभारती प्रकाशन, 2013, पृ. 121–129।
10. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. भारतीय चिंतन परंपरा. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2016, पृ. 73–81।